अध्याय-I

2003 – 04 की विशेष उपलब्धियां

- इस्पात की मांग, विशेष रूप से चीन में अच्छी वृद्धि के कारण इस्पात उद्योग में सामान्य रूप से सुधार हुआ।
- भारत विश्व में अपरिष्कृत इस्पात के उत्पादन में 9वें स्थान पर बना रहा।
- 2003-04 में 80 लाख टन का उत्पादन करके भारत विश्व में स्पंज लोहे के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में उभरकर आया है।
- परिसज्जित इस्पात का उत्पादन 361.5 लाख टन (अनन्तिम) हुआ जो पिछले वर्ष अर्थात 2002-03 में हुए उत्पादन की तुलना में यह 7.4% अधिक है।
- परिसज्जित इस्पात का निर्यात अनन्तिम रूप से 53 लाख टन होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष के दौरान हुए निर्यात की तुलना में 17.6% अधिक है।
- परिसज्जित इस्पात की प्रत्यक्ष खपत अनन्तिम रूप से 304 लाख टन होने का अनुमान है। यह पिछले वर्ष की प्रत्यक्ष खपत की तुलना में 5.2% अधिक है।
- इस्पात उपभोक्ताओं की शिकायतों का समाधान करने के लिए इस्पात मंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 29,8.03 को लुधियाना में इस्पात उपभोक्ता परिषद की बैठक आयोजित की गई।
- स्टील अथारिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) ने 24178 करोड़ रुपए का रिकार्ड कारोबार किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 26% अधिक है। कम्पनी ने 2512 करोड़ रुपए का लाभ अर्जित किया जबकि पिछले वर्ष 304 करोड़ रुपए की हानि हुई थी।
- सेल ने 129 लाख टन तप्त धातु का रिकार्ड उत्पादन किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 6% अधिक है। 121 लाख टन अपरिष्कृत इस्पात का रिकार्ड उत्पादन हुआ जो पिछले वर्ष की तुलना में 7% अधिक है।
- सेल के एकीकृत इस्पात संयंत्रों द्वारा वर्ष के दौरान 105.8 लाख टन के लक्ष्य की तुलना में 110.2 लाख टन विक्रेय इस्पात का उत्पादन किया गया जो पिछले वर्ष की तुलना में 6.5% अधिक है। सेल की एक सहायक कम्पनी, इस्को ने वर्ष के दौरान 25.7 लाख टन विक्रेय इस्पात का अतिरिक्त उत्पादन किया।
- वर्ष 2003-04 के दौरान राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर आई एन एल) ने 40.6 लाख टन तप्त धातु 35.1 लाख टन द्रव इस्पात और 31.7 लाख टन, विक्रेय इस्पात का रिकार्ड उत्पादन किया जो उनकी क्षमता उपयोगिता का लगभग 12% है। वर्ष के दौरान कम्पनी ने 1521 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया जो 2002-2003 के दौरान अर्जित 521 करोड़ रुपए के निवल लाभ की तुलना में 192% अधिक है।
- नेशनल मिनरल डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लिमिटेड (एन एम डी सी) ने 183.3 लाख टन लौह अयस्क और 71,159 कैरेट हीरे का उत्पादन किया।
- एनएमडीसी ने 767.66 करोड़ रुपए मूल्य के 70.9 लाख टन लौह अयस्क (21.5 लाख टन के सीधे निर्यात सहित) का जापान, दक्षिण कोरिया और चीन आदि को निर्यात किया।

- कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के आई ओ सी एल) ने पिछले वर्ष उत्पादित 34.50 लाख टन को पार करते हुए वर्ष 2003-2004 के दौरान 36.71 लाख टन पैलेटों का उत्पादन करके एक नया रिकार्ड बनाया है। यह लक्ष्य का 108% है और पिछले वर्ष की तुलना में 6% की वृद्धि है।

- के आई ओ सी एल ने 2003-04 के दौरान अब तक की सबसे अधिक 1024 करोड़ रुपए की कुल बिक्री की जबकि पिछले वर्ष 724.14 करोड़ रुपए की बिक्री हुई थी। यह पिछले वर्ष की तुलना में 4% अधिक है और लक्ष्य का 157% है।

- मेकॉन ने श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेन्टर की सेकेण्ड लांच पैड प्रोजेक्ट के निर्माण के प्रतिष्ठित और राष्ट्रीय महत्व के अपूर्ण कार्य पूरे कर लिए हैं। पृथक-पृथक परीक्षण और चालू करने के कार्य के बाद अधिकांश सिस्टम सब सिस्टम इसरो प्रोजेक्ट प्राधिकारियों को उनके उपयोग के लिए सौंप दिए गए हैं।

- 1.3.2003 से 31.3.2004 तक की अवधि के दौरान मॉयल ने 276.09 करोड़ रुपए का कारोबार किया और 47.82 करोड़ रुपए का कर-पूर्व लाभ अर्जित किया।

- वर्ष के दौरान एम टी सी लिमिटेड ने 3250.32 करोड़ रुपए का कारोबार किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 56.39% अधिक है। 32.90 करोड़ रुपए कर-पूर्व लाभ अर्जित किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 96.53% से अधिक है।

- देश में इस्पात की उपलब्धता में वृद्धि करने में निजी क्षेत्र प्रमुख भूमिका अदा करता रहा। 2003-04 में परिसज्जित इस्पात के उत्पादन में उनका हिस्सा बढ़कर लगभग 68% हो गया जबकि 1992-93 में यह 45% था।

- इस समय देश में विद्युत चाप भट्टी (ई ए एफ) पर आधारित 35 इस्पात संयंत्र कार्य कर रहे हैं जिनकी कुल क्षमता 67.2 लाख टन वार्षिक है। अन्य कई इकाइयां बन्द हो चुकी बताई गई हैं। विभिन्न कारण जैसे आदानों की बढ़ती लागत, बढ़ता टैरिफ, विद्युत की कमी, संसाधनों की कमी आदि ई ए एफ उद्योग की इस हालत के लिए जिम्मेवार समझे जाते हैं। ई ए एफ की उन इकाइयों जिन्होंने 2003-04 के दौरान विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात के कार्यालय को अपना उत्पादन सूचित किया था, का उत्पादन 57.00 लाख टन होने का अनुमान था जबकि 2002-2003 के दौरान 51.9 लाख टन उत्पादन हुआ था।

- 2003-2004 (दिसम्बर, 2003 तक) के दौरान यह अनुमान लगाया गया है कि 650 प्रेरण भट्टी इकाइयां चालू थीं। उनके द्वारा 49 लाख टन का उत्पादन किए जाने की आशा है जबकि 2002-2003 के दौरान 47.5 लाख टन उत्पादन हुआ था। वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए संयुक्त संयंत्र समिति ने प्रेरण भट्टी उद्योग का आल-इण्डिया बेस-लाइन सर्वे किया है।

- पोत भंजन एक पर्यावरण-प्रेमी कार्य है और अब इसे पोत पुनश्चक्रण उद्योग के नाम से जाना जाता है। इस उद्योग का सबसे अधिक सकारात्मक पहलू यह है कि इसके 90% से अधिक उत्पादन का पुनश्चक्रण होता है। पोतों के इस प्रकार के पुनश्चक्रण के जरिए उत्पादित लगभग 20 से 25 लाख टन इस्पात इतनी ही मात्रा में एकीकृत इस्पात संयंत्रों के जरिए इस्पात का उत्पादन करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे लोहा, अयस्क, कोयला आदि की लगभग 65 लाख टन की बचत करता है तथा उसी सीमा तक पारिस्थितिकी सन्तुलन बहाल करता है। अत्यधिक श्रम सघन उद्योग होने के अतिरिक्त यह विद्युत की भी काफी बचत करता है जिसकी देश में कमी है।